संजीव रिफ्रेशर

हिन्दी

क्षितिज भाग-2 एवं कृतिका भाग-2

(कक्षा-10)

पाठ्यक्रम 'अ'

[नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत CBSE द्वारा जारी नवीनतम पाठ्यक्रम एवं NCERT द्वारा जारी नवीनतम पाठ्यपुस्तकों पर आधारित]

मुख्य विशेषताएँ

- **CBSE द्वारा जारी नवीनतम पाठ्यक्रम एवं नमूना प्रश्न-पत्र 2023-24 पर पूर्णतः आधारित**
- **पाठ्यक्रमानुसार वस्तुनिष्ठ/बहुचयनात्मक प्रश्नों का समावेश**
- सभी पद्य पाठों के कवियों का जीवन परिचय
- सभी पद्य पाठों का परिचय
- सम्पूर्ण कविताओं का कठिन शब्दार्थ सहित भावार्थ
- सभी गद्य पाठों के लेखकों का जीवन परिचय
- सभी गद्य पाठों का सार
- सभी गद्य पाठों के कठिन शब्दों के अर्थ
- पद्यांश एवं गद्यांश पर आधारित बहुचयनात्मक प्रश्न
- पाठ्यपुस्तक के सभी प्रश्न
- पाठ्यक्रमानुसार अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न
- सरल, स्तरीय भाषा-शैली में विषय-प्रतिपादन
- अपठित बोध एवं व्याकरण
- अनुच्छेद-लेखन; पत्र-लेखन; स्ववृत्त-लेखन एवं ई-मेल लेखन; विज्ञापन-लेखन एवं संदेश-लेखन

प्रकाशक :

संजीव प्रकाशन

जयपुर

मूल्य :
₹ 240.00

प्रकाशक :
संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,
जयपुर-3
email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
website : www.sanjivprakashan.com

© प्रकाशकाधीन

लेजर टाइपसैटिंग :
संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

★ ★ ★ ★

- इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं-
  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग
  संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

विषय-सूची

क्षितिज भाग-2

काव्य-खण्ड

1. सूरदास 1-12
2. तुलसीदास 13-26
3. जयशंकर प्रसाद 27-36
4. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' 37-47
5. नागार्जुन 48-62
6. मंगलेश डबराल 63-74

गद्य-खण्ड

7. नेताजी का चश्मा (स्वयं प्रकाश) 75-93
8. बालगोबिन भगत (रामवृक्ष बेनीपुरी) 94-112
9. लखनवी अंदाज (यशपाल) 113-126
10. एक कहानी यह भी (मन्नू भण्डारी) 127-148
11. नौबतखाने में इबादत (यतीन्द्र मिश्र) 149-170
12. संस्कृति (भदंत आनंद कौसल्यायन) 171-182

कृतिका भाग-2
(पूरक-पुस्तक)

1. माता का अँचल (शिवपूजन सहाय) 183-192
2. साना-साना हाथ जोड़ि ..... (मधु कांकरिया) 193-205
3. मैं क्यों लिखता हूँ? (अज्ञेय) 206-211

अपठित बोध

1. अपठित गद्यांश 212-235
2. अपठित काव्यांश 235-260

व्याकरण

1. रचना के आधार पर वाक्य-भेद 261-269
2. वाच्य 270-275
3. पद-परिचय 276-281
4. अलंकार 282-289

लेखन

1. अनुच्छेद-लेखन 290-313
2. पत्र-लेखन
   (औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्र) 314-351
3. स्ववृत्त-लेखन 352-362
4. ई-मेल लेखन 363-375
5. विज्ञापन-लेखन 376-389
6. संदेश-लेखन 390-401

हिन्दी कक्षा-10
क्षितिज भाग-2
काव्य-खण्ड

1. सूरदास

कवि-परिचय

जीवन-परिचय–सूरदास का जन्म सन् 1478 में माना जाता है। एक मान्यता के अनुसार इनका जन्म मथुरा के समीप 'रुनकता' या रेणुका क्षेत्र में हुआ, जबकि अन्य मान्यता के अनुसार इनका जन्म-स्थान दिल्ली के पास 'सीही' नामक गाँव माना जाता है। ये अल्पायु में ही विरक्त होकर मथुरा एवं वृन्दावन के मध्य 'गऊघाट' पर रहकर भक्ति-गायन करते थे। वहीं पर महाप्रभु वल्लभाचार्य ने उन्हें अपना शिष्य बनाया और पुष्टिमार्ग में दीक्षित किया। तब वे श्रीनाथ के मन्दिर में भक्ति-गायन करते रहे। सन् 1583 में पारसौली में उनका देहान्त हो गया।

रचनाएँ–सूरदास ने अपने आराध्य श्रीकृष्ण की लीलाओं से सम्बन्धित हजारों पदों की रचनाएँ कीं। सूर की तीन रचनाएँ प्रसिद्ध हैं–'सूरसागर', 'साहित्य लहरी' और 'सूर सारावली'। 'सूरसागर' उनकी कीर्ति का प्रमुख ग्रन्थ है। 'सूरसागर' में विविध राग-रागिनियों में श्रीकृष्ण की लीलाओं का समधुर वर्णन किया गया है।

काव्यगत विशेषताएँ–सूरदास ने अपने आराध्य की बाल-लीलाओं, रूप-छवि, संयोग-वियोग, शृंगार, वात्सल्य एवं भक्ति से सम्बन्धित पदों की रचना कर अपनी भक्ति-भावना की अभिव्यक्ति की। शृंगार एवं वात्सल्य के वे अद्वितीय कवि माने जाते हैं। बाल-लीला की मनोरम झाँकियों का वर्णन करने में वे बेजोड़ माने जाते हैं। इन्होंने 'भ्रमर-गीत' में सगुण भक्ति का सुन्दर प्रतिपादन किया है।

भाषा-शैली–सूरदास के समस्त पद विविध राग-रागिनियों में निबद्ध होने से सुगेय हैं। ये श्रेष्ठ गायक कवि प्रतीत होते हैं। सूरदास के पदों की भाषा शुद्ध साहित्यिक ब्रजभाषा है; जिसमें कोमलता, मधुरता एवं लावण्य विद्यमान है। उन्होंने अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग किया है। उक्त अनेक विशेषताओं के कारण सूर को हिन्दी-साहित्याकाश का सूर्य माना जाता है।

पाठ-परिचय

पाठ में संकलित चारों पद 'भ्रमरगीत' से लिये गये हैं। मथुरा से श्रीकृष्ण के सन्देशवाहक रूप में आये उद्धव पर भ्रमर के बहाने गोपियों ने अनेक व्यंग्य-बाण छोड़े हैं। वे कभी तो उपालम्भ देती हैं तो कभी अपनी विरह-व्यथा व्यक्त करती हैं।

प्रथम पद में गोपियाँ कहती हैं कि हे उद्धव, तुम बड़े सौभाग्यशाली हो, जो प्रेम के चक्कर में नहीं पड़े हो। तुमने कभी प्रेम का स्वाद नहीं चखा है। ये तो हम ही मूर्खा हैं जो कृष्ण–प्रेम में ऐसे लिपट गईं, जैसे गुड़ में चींटी लिपट जाती है।

द्वितीय पद में गोपियाँ प्रियतम कृष्ण को निष्ठुर कहती हैं। वे यह स्वीकार करती हैं कि उनके मन की आस मन में ही रह गई है। वे प्रियतम के आने की बाट जोह रही थीं, परन्तु वे न आये और हमारे लिए योग–साधना का सन्देश भेज दिया। इससे हमें निराशा हो रही है।

तृतीय पद में गोपियाँ उद्धव की योग–साधना को कड़वी ककड़ी जैसी बताकर कृष्ण के प्रति हारिल पक्षी की लकड़ी के समान अपनी प्रेमनिष्ठा व्यक्त करती हैं तथा कृष्ण को ही अपना जीवनाधार बताती हैं।

चतुर्थ पद में गोपियाँ व्यंग्य करती हुई कहती हैं कि कृष्ण पहले से ही चतुर थे और अब उन्होंने मथुरा में रहते हुए राजनीति सीख ली है। वे हमें योग–मार्ग अपनाने की बात कहकर अन्याय कर रहे हैं। उनका ऐसा व्यवहार अन्यायपूर्ण और राजधर्म के विपरीत है।

काव्यांश के आधार पर बहुविकल्पीय प्रश्न

पद

(1)

ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीति–नदी मैं पाउँ न बोर्‌यौ, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी॥

कठिन–शब्दार्थ–बड़भागी = भाग्यशाली। **अपरस** = अछूता, अलिप्त। **तगा** = धागा, बन्धन। **नाहिन** = नहीं। **पुरइनि पात** = कमल का पत्ता। **माहँ** = में। **प्रीति** = प्रेम। **पाउँ** = पाँव। **बोर्‌यौ** = डुबोया। **परागी** = मोहित हुई। **भोरी** = भोली। **गुर** = गुड़। **पागी** = लिपटी हुई।

भावार्थ–गोपियाँ उद्धव की प्रेमहीनता पर व्यंग्य कर कहती हैं कि हे उद्धव! तुम सचमुच बड़े भाग्यशाली हो, क्योंकि तुम कभी प्रेम के धागे से नहीं बँधे हो, अर्थात् कृष्ण के प्रेम–बन्धन से सर्वथा मुक्त हो। तुम प्रेम–बंधन से उसी प्रकार सर्वथा मुक्त रहते हो, जिस प्रकार कमल का पत्ता हमेशा जल में रहता है, परन्तु उस पर जल का एक भी दाग नहीं लग पाता अर्थात् उस पर जल की बूँद भी नहीं ठहर पाती है। अथवा तेल की मटकी को जल के भीतर डुबाने पर भी उस पर जल की एक बूँद भी नहीं ठहरती है। इसी प्रकार तुम भी प्रेम–रूप कृष्ण के हमेशा पास रहते हुए भी कभी उनसे प्रेम नहीं करते, उनके प्रभाव से हमेशा मुक्त बने रहते हो।

गोपियाँ कहती हैं कि तुमने आज तक कभी भी प्रेम–नदी में अपना पैर तक नहीं डुबोया अर्थात् कभी प्रेम के पास तक नहीं फटके और तुम्हारी दृष्टि किसी के रूप को देखकर उस पर मोहित नहीं हुई है। परन्तु हम तो भोली–भाली अबलाएँ हैं, जो अपने प्रियतम कृष्ण की रूप–माधुरी पर उसी प्रकार आसक्त होकर उसके प्रेम में मोहित हो गई हैं, जैसे चींटी गुड़ पर आसक्त होकर उसके ऊपर चिपट जाती है और फिर उससे अलग नहीं हो पाती है और वहीं अपने प्राण दे देती है।

1. गोपियों ने उद्धव को कैसा बताया है?

(अ) भाग्यहीन (ब) भाग्यवादी (स) अभागा (द) बड़े भाग्य वाला

2. 'पुरइनि पात रहत जल भीतर' पद में 'पुरइनि पात' से आशय है–

(अ) पूर्वी हवा (ब) पुराना पत्ता (स) कमल का पत्ता (द) पैर रूपी पत्ता

3. 'ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि' पद में तेल की गगरी किसे कहा गया है?

(अ) कृष्ण (ब) राधा (स) गोपियाँ (द) उद्धव

4. गोपियों के अनुसार उद्धव का स्वरूप कृष्ण-प्रेम में कैसा था?

(अ) आसक्त (ब) लिप्त (स) मुक्त (द) निर्लिप्त

5. सूरदास की गोपियों ने स्वयं को कैसा बताया है?

(अ) चतुर (ब) वाचाल (स) भोली (द) समझदार

उत्तर–1. (द) 2. (स) 3. (द) 4. (द) 5. (स)

(2)

मन की मन ही माँझ रही।
कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही।
अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही।
अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही।
चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही।
'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही॥

कठिन-शब्दार्थ–**माँझ** = में। **अवधि** = समय। **अधार** = आधार, सहारा। **आवन की** = आने की। **बिथा** = पीड़ा। **बिरह** = वियोग, बिछुड़ना। **दही** = जली। **गुहारि** = रक्षा के लिए पुकारना। **धार** = योग की धारा। **धीर** = धैर्य। **धरहिं** = रखें, धारण करें। **मरजादा** = मर्यादा।

भावार्थ–कृष्ण द्वारा भेजा गया हृदय-विदारक सन्देश सुनकर गोपियाँ उद्धव को उलाहना देती हुई कहती हैं कि हे उद्धव! हमारे मन की मन में ही रह गयी, अर्थात् हमने सोचा था कि कृष्ण यहाँ लौटकर अवश्य आयेंगे और तब हम उनके विरह में सहे हुए सम्पूर्ण कष्टों की गाथा उन्हें सुनायेंगी। परन्तु अब तो उन्होंने स्वयं को भुलाकर निर्गुण-ब्रह्म की आराधना करने का अर्थात् योग-साधना का सन्देश भेजा है। हे उद्धव! तुम्हीं बताओ कि उनके द्वारा त्याग दिए जाने पर हम अपनी इस असह्य विरह-वेदना की कहानी किसे जाकर सुनाएँ? अब हमसे यह और अधिक सही नहीं जाती। अब तक हम उनके आने की अवधि के सहारे अपने तन और मन से इस विरह-व्यथा को सहती आ रही थीं। परन्तु अब तुम्हारे द्वारा दिए गये इस योग-सन्देश को सुन-सुनकर हमारी विरह-व्यथा और भड़क उठी है। विरह-सागर में डूबती हुई हम गोपियों को जहाँ से सहायता मिलने की आशा थी, अब उसी स्थान से इस योग-साधना के सन्देश रूपी जल की ऐसी तेज धारा बही है कि वह हमारे प्राण लेकर के ही रुकेगी। अर्थात् हम जिसे अपना रक्षक मान रही थीं, उसने ही हमें योग-साधना के सन्देश की धारा से बहा दिया है। सूरदास के अनुसार गोपियाँ कहने लगीं कि अब तो कृष्ण ने सारी लोक-मर्यादाएँ छोड़ दी हैं। उन्होंने हमारा प्रेम निभाने की बजाय हमारे साथ छल किया है, अतः हम अब धैर्य कैसे धारण करें?

1. गोपियाँ अपना विरह-दर्द किसे सुना रही हैं?

(अ) सखियों को (ब) सूरदास को (स) उद्धव को (द) ग्रामवासियों को

2. कृष्ण के आने की आशा गोपियों ने किसे माना है?

(अ) साँसों को (ब) समय को (स) जीवन को (द) मृत्यु को

3. गोपियाँ उद्धव के किस संदेश को सुनकर विरह-व्यथा में जलती हैं?

(अ) प्रेम-संदेश (ब) जोग-संदेश (स) भोग-संदेश (द) विरह-संदेश

4. 'मन की मन ही माँझ रही' पद में 'माँझ' पद का आशय है–

(अ) मेलजोल रखना (ब) मध्य रखना (स) मांजना (द) अलग होना

5. 'सूरदास अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही' पद में किसने मर्यादा नहीं रखी?

(अ) उद्धव (ब) कृष्ण (स) गोपियाँ (द) सूरदास

उत्तर–1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (ब) 5. (ब)

(3)

हमारैं हरि हारिल की लकरी।
मन क्रम बचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।
जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जक री।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।
सु तौ ब्याधि हमकौं लै आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ 'सूर' तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी॥

कठिन-शब्दार्थ–**हारिल** = एक पक्षी विशेष जो हमेशा अपने पंजों में कोई न कोई लकड़ी का टुकड़ा या तिनका पकड़े रहता है। **लकरी** = लकड़ी। **क्रम** = कर्म। **उर** = हृदय। **जक** = रटन, धुन। **निसि** = रात। **करुई** = कड़वी। **ब्याधि** = बीमारी। **तिनहिं** = उन्हें ही। **चकरी** = चंचल, चकई के समान सदैव अस्थिर रहने वाला।

भावार्थ–कृष्ण के प्रति अपने दृढ़ प्रेम का वर्णन करती हुई गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि हे उद्धव! हमारे लिए तो कृष्ण हारिल पक्षी की लकड़ी के समान बन गए हैं, अर्थात् जिस प्रकार हारिल पक्षी हर समय अपने पंजों में लकड़ी या तिनके को पकड़े रहता है, उसी प्रकार हम भी निरन्तर प्रेमनिष्ठा से कृष्ण का ध्यान करती रहती हैं। हमने मन, वचन और कर्म से नंदनन्दन रूपी लकड़ी को अर्थात् कृष्ण के रूप और उनकी स्मृति को अपने मन द्वारा कस कर पकड़ लिया है। अब उसे हमसे कोई भी नहीं छुड़ा सकता है। हमारा मन जागते-सोते चाहे किसी भी दशा में क्यों न हो, हमेशा ही कृष्ण-कृष्ण की रट लगाये रहता है अर्थात् हर समय उन्हीं का ध्यान करता रहता है।

गोपियाँ कहती हैं कि हे भ्रमर! तुम्हारी योग की बातें सुनते ही हमें ऐसा लगता है कि मानो हमने कड़वी ककड़ी खा ली हो अर्थात् तुम्हारी ये योग की बातें हमें नितान्त अरुचिकर लगती हैं। तुम तो हमारे लिए ऐसी मुसीबत ले आए हो जिसे हमने न तो कभी देखा, न सुना और न कभी भुगता ही है। अर्थात् हम तुम्हारी इस योग रूपी बीमारी से पूरी तरह अपरिचित हैं। इसलिए इस बीमारी को तुम उन लोगों को जाकर दो जिनके मन चकई के समान हमेशा चंचल रहते हैं अथवा चकरी के समान घूमते रहते हैं। परन्तु हमारी चित्तवृत्ति तो पहले से ही कृष्ण-प्रेम में स्थिर हो चुकी है, इसलिए तुम्हारा यह योग हमारे लिए व्यर्थ है।

1. 'हमारैं हरि हारिल की लकड़ी' पद में 'हारिल' से तात्पर्य है–

(अ) कृष्ण (ब) उद्धव (स) पक्षी (द) सूरदास

2. गोपियों को कड़वी ककड़ी के समान क्या लगता है?

(अ) उद्धव (ब) कृष्ण (स) विरह (द) जोग